# गाँधीवाद पाखंड या आदर्श? गाँधीवाद यानी हिंदुओं की कीमत पर मुस्लिम तुष्टिकरण

बहुसंख्यक हिंदू अल्पसंख्यक मुस्लिम को दबाते हैं इसलिए दंगा होता है-महात्मा गाँधी.

भारत में मुस्लिम तुष्टिकरण की शुरुआत १८५७ के विद्रोह के बाद उत्पन्न स्थितियों को ध्यान में रखते हुए एक अंग्रेज के उस विचार के मद्दे नजर हुई थी जिसमे उसने कहा था कि अगर भारतीय ब्रिटिश शासन हिंदू हित पर मुस्लिमों को तरजीह देना शुरू कर दें तो सत्ता को स्थायी बनाया जा सकता है.

इसके पीछे दर्शन यह था कि हिंदू कभी भी भारत में अंग्रेजी हुकूमत को स्वीकार नही करेंगे और अंग्रेजी हुकूमत का विरोध करते रहेंगे साथ ही अगर मुस्लिम भी उनका साथ देते रहेंगे तो अंग्रेजी हुकूमत पर हमेशा खतरा मंडराता रहेगा. ऐसे में हिंदू हित पर मुस्लिमों को तरजीह देकर मुस्लिमों का समर्थन हासिल किया जा सकता है जिसका परिणाम यह होगा की एक तो मुस्लिम अंग्रेजों के समर्थक बन जायेंगे दूसरी ओर हितों के टकराव के कारण हिंदुओं की कुछ शक्ति मुस्लिमों के विरुद्ध इस्तेमाल होगी और अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध संघर्ष कमजोर पड़ जायेगा.

भारतीय ब्रिटिश सरकार ने तत्काल प्रभाव से इसे मान लिया और सर सैयद अहमद खान को अपना प्रथम मोहरा बनाकर इसकी निब रखी जिसे कालान्तर में मुस्लिम लीग का गठन कर संगठित रूप दिया गया और जिसका विस्तृत प्रभाव मोरले-मिन्टो के सुधार में सामने आया. परिणामतः हिंदू-मुस्लिम एकता और हिंदू-मुस्लिम के सम्मिलित हित की बात करने वाले सैय्यद अहमद खान मुस्लिम हित की बात करने लगे. सैय्यद अहमद खां अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय स्थापित कर मुस्लिमो को एक नई ही दिशा देने लगे जिसका परिणाम पृथक निर्वाचन के रूप में सामने आया. यह पृथकता केवल निर्वाचन तक ही सिमित नही रहा वरन एक जुट होकर अंग्रेजों का विरोध करने वाले हिंदू-मुस्लिमों की एकता को भी बुरी तरह प्रभावित किया.

मोहनदास करमचन्द गाँधी का आगमन

पूर्व ब्रिटिश सैनिक मोहनदास करमचंद गाँधी, बाएं से दूसरा

ऐसे समय में ही एक पूर्व ब्रिटिश सैनिक मोहनदास करमचन्द गाँधी नामक व्यक्ति का प्रार्दुभाव हुआ जिसका हठयोग दक्षिण अफ्रीका में आंशिक रूप से सफल रहा था और अपने उसी हठयोग को

अहिंसात्मक आन्दोलन का जामा पहनाकर कांग्रेस का कमान सम्भाल लिया.

हिंदू-मुस्लिम झगड़े पर उनका विचार था "मुस्लिम अल्पसंख्यक है और बहुसंख्यक उन्हें दबाने की कोशिश करता है. फलतः मुस्लिम हिंदुओं से अलग होते जा रहे है." उन्होंने हिंदुओं और मुस्लिमों को अपने इसी त्रुटिपूर्ण दर्शन के आधार पर संगठित करने का प्रयास किया. परिणामतः अपने इस प्रयास में वह धीरे-धीरे मुस्लिम परस्त होते गए. जैसे-जैसे इनकी मुस्लिमपरस्ती बढती गयी हिंदुओं में असंतोष बढ़ता गया. मुसलमान भी अब खुद को हिंदू से अलग देखने लगे जिसकी भूमिका तो मोरले-मिन्टो ने तैयार की थी परन्तु जिसे खाद पानी गाँधी के त्रुटिपूर्ण दर्शन से प्राप्त हो रहा था.

परिणामतः हिंदू-मुस्लिम के बीच मतभेद बढता गया. खिलाफत आन्दोलन की असफलता के बाद तो यह मतभेद खूनी संघर्ष में बदल गया और हिंदू-मुस्लिम दंगों से देश जलने लगा. यहाँ तक की 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' गानेवाला इक़बाल 'सारे जहां से महान हमारा प्यारा पाकिस्तान' गाने लगा परन्तु गाँधी के त्रुटिपूर्ण दर्शन पर कोई प्रभाव नही पड़ा.

गाँधी का त्रुटिपूर्ण दर्शन

गाँधी का मानना था कि भारत में अल्पसंख्यक मुस्लिम बहुसंख्यक हिंदुओं से उलझ ही नही सकते है. वे प्रत्येक हिंदू मुस्लिम दंगों के लिए हिंदुओं के द्वारा अहिंसा की नीति का पालन न करने को जिम्मेदार मानते थे. मुस्लिमों द्वारा प्रायोजित मोपला दंगे, जिसमे बहुतायत में हिंदू मारे गए थे, के बाद मुस्लिमों के लिए चंदा इकठ्ठा करते हुए उन्होंने यहाँ तक कहा कि हिंदू मुस्लिमों को दबाते है इसलिए दंगा होता है.

यूँ तो गाँधी के मुस्लिमपरस्ती के कार्य बहुत अधिक है परन्तु यहाँ कुछ प्रमुख कार्यों और विचारों को रखा जा रहा है ताकि इतने से ही भारत में छद्मधर्मनिरपेक्षता के मूल को समझने में मदद मिल सके क्योंकि भारतीय धर्मनिरपेक्षता गाँधी के इन विचारों से भी ग्रस्त है. अतः देश को इससे मुक्त करने का प्रयास किया जा सके :

गाँधी की अहिंसा का पाठ सिर्फ हिन्दुओं के लिए था ?

गाँधी नेहरु

गाँधी अहिंसा का पाठ सिर्फ और सिर्फ हिंदुओं को ही सिखाते थे. उन्होंने किसी मुसलमान को उसके हिंसक अथवा हिंदू विरोधी, समाज विरोधी कार्यों के लिए कभी भी फटकार नही लगाई.

प्रमाण :

रावलपिंडी से बमुश्किल जान बचाकर भागकर भारत पहुंचे एक व्यक्ति द्वारा बिडला भवन में गाँधी से पाकिस्तान में हो रहे हिंदुओं के नरसंहार और बलात्कार से रक्षा करने की गुहार लगाने पर गाँधी की प्रतिक्रिया थी :

“आप यहाँ क्यों आये ? वहाँ मर क्यों नही गए ? मैं तो इसी चीज पर कायम हूँ कि हम पर जुल्म हो तो भी हम जहाँ पड़े है, वहीँ पड़े रहें, मर जाएँ. लोग मारे तो मर जाएँ, यह न कहें की हम अब क्या कर सकते है, मकान नहीं, कुछ नही. मकान तो पड़ा है, धरती माता हमारी मकान है, उपर आकाश है. जो मुसलमान डर से भाग गए, उनके मकान पड़े है, जमीन पड़ी है. तो क्या मैं कहूँ की आप मुसलमानों के घरों में चले जाएँ ? मेरी जुबान से ऐसा नही निकल सकता. मुसलमानों के घर कल तक थे, वे आज उनके है. उसमे जो हमारे शरणार्थी हैं वे अपने आप चले जाएँ. मैं आपसे यह कहूँगा, रावलपिंडी वालों से भी कहो की आप वहाँ जाएँ और जो सिक्ख और हिंदू शरणार्थी है उनको मिले, उनसे कहें की भाई, आप वापिस जाएँ और अपने आप, आप पुलिस के मार्फत नही, मिलिट्री के मार्फत नही.”

“जो लोग पंजाब में मर चुके है उनमे से एक भी वापिस नही आ सकता. हमे भी अंत में मरना है. यह सच है कि वे कत्ल कर दिए गए लेकिन कोई बात नही. बहुत से हैं जो और दूसरे कारणों से मारे जाते है. यदि वे कत्ल हुए तो वीरता से मरे, उन्होंने कुछ खोया नही, पाया है. लेकिन प्रश्न यह है कि उनका क्या होगा जिन्होंने संहार किया ? यह समझ लो की मनुष्य बड़ी भूलें करता है. पंजाब में अंग्रेजी सेना ने हमारी रक्षा की, परन्तु यह कोई रक्षा नही है. लोगों को चाहिए खुद अपनी रक्षा करे और मौत से न डरे.

मारनेवाले तो हमारे मुस्लिम भाई हैं. हमारे भाई अपना धर्म बदल दें तो क्या वे अपने भाई न रहेंगे ? क्या हम भी उन जैसा व्यवहार नहीं करते. हमने स्त्रियों के साथ बिहार में क्या कुछ नही किया (कलकत्ता और नोआखाली में प्रत्यक्ष कार्यवाही के दौरान हो रहे हिंदुओं के नरसंहार, लूट और बलात्कार के प्रतिक्रिया स्वरूप बिहार में उनके परिजनों ने प्रतिक्रिया व्यक्त की जहाँ नेहरु ने सैनिक भेजकर हिंदुओं को गोली से भुनवा दिया था).”

“तुम्हे शांतिपूर्वक विचार करना चाहिए की तुम कहाँ बहे जा रहे हो. हिंदुओं को मुसलमानों के विरुद्ध क्रोध नही करना चाहिए, चाहे मुसलमान उन्हें मिटाने का विचार ही क्यों न रखते हो. अगर मुसलमान सभी को मार डाले तो हम बहादुरी से मर जाये. इस दुनिया में भले उन्ही का राज हो जाये, हम नई दुनिया के बसनेवाले हो जायेंगे. कम से कम मरने से तो हमे बिलकुल नहीं डरना चाहिए. जन्म और मरण तो हमारे नसीब में लिखा है फिर उसमे हर्ष-शोक क्यों करें ? अगर हंसते हंसते मरेंगे तो सचमुच एक नए जीवन में प्रवेश करेंगे. एक नए हिंदुस्तान का निर्माण करेंगे.” (अप्रैल और सितम्बर १९४७ की प्रार्थना सभा)

कई सवाल ?

१. सवाल है, हिंदुओं की लाश पर गाँधी किस नए हिंदुस्तान की जन्म की बात कह रहे थे ? कहीं उनका नया हिन्दुस्तान मुस्लिमस्तान तो नही था ? हिंदुओं को मुस्लिमों के हाथों खुशी खुशी मरने की सीख देनेवाले गाँधी क्या मुस्लिमों को हिंदुओं की हत्या न करने की सीख भी नही दे सकते थे ? मैंने गाँधी के “प्रार्थना और प्रवचन” के तीनों भाग पढ़ा है. उसमे कहीं भी वे मुस्लिम हिंसा का खुलकर विरोध नही किये है.

२. गाँधी मंदिरों और अपने सभी सभाओं में गीता के साथ कुरआन का भी पाठ किया करते थे पर इनकी कभी भी हिम्मत नही हुई की वह किसी मस्जिद में जाकर गीता का पाठ करें

३. गाँधी ने छत्रपति शिवाजी महाराज, गुरु गोविन्द सिंह, महाराणा प्रताप जैसे महापुरुषों को मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए पथभ्रष्ट देशभक्त कहकर अपमानित किया क्योंकि इन्होने उस समय मुस्लिम शासकों से लोहा लिया जब देश उनके अत्याचार से त्राहि त्राहि कर रहा था.

४. स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती की हत्या एक कट्टर मुस्लिम अब्दुल रशीद ने की थी. गाँधी ने उस हत्यारे का पक्ष लिया और मुस्लिमों से माफ़ी मांगी थी. गाँधी ने कहा, "मैंने अब्दुल रशीद को भाई कहा और मैं इसे दोहराता हूँ. मैं यहाँ तक की उसे स्वामी जी की हत्या का दोषी भी नहीं मानता हूँ. वास्तव में दोषी वे लोग हैं जिन्होंने एक दूसरे के विरुद्ध घृणा की भावना पैदा किया. इसलिए यह अवसर दु:ख प्रकट करने या आंसू बहाने का नहीं है."

उन्होंने आगे कहा, "ये हम पढे, अध-पढ़े लोग हैं जिन्होंने अब्दुल रशीद को उन्मादी बनाया. ..स्वामी जी की हत्या के पश्चात हमे आशा है कि उनका खून हमारे दोष को धो सकेगा, हृदय को निर्मल करेगा और मानव परिवार के इन दो शक्तिशाली विभाजन को मजबूत कर सकेगा."

इतना ही नहीं इन्होने कहा स्वामी जी की हत्या में कुछ भी अनुपयुक्त नहीं है और इन्होने हत्यारे अब्दुल रशीद के लिए वकालत करने की इच्छा भी प्रकट की.

५. मोपला विद्रोह में अधिकांश में हिंदू मारे गए थे पर इन्होने मुस्लिमों के लिए चंदा इकट्ठा किया था.

६. हैदराबाद के निजाम के गैर मुस्लिमों पर अत्याचारी शासन के विरुद्ध सिक्खों और हिंदुओं के संघर्ष को समर्थन देने से गाँधी ने यह कहकर मना कर दिया की वे महामहिम निजाम को परेशान नही करना चाहते है.

७. जब मुस्लिम लीग के धर्मान्ध और हिंसक मुसलमानों ने पाकिस्तान को प्राप्त करने के लिए बल प्रयोग की धमकी दी तो गाँधी ने मुस्लिम लीग से प्रार्थना की कि वे मुसलमानों द्वारा शासित होने के लिए तैयार है.

८. यहाँ तक की मुस्लिम लीग के हिंदुओं के विरुद्ध प्रत्यक्ष कार्यवाही घोषित किये जाने पर उन्हें रोकने का कोई प्रयत्न नही किया. परिणामत: वर्तमान बंगलादेश, पाकिस्तान और कोलकाता में हजारों, लाखों हिंदुओं को मार दिया गया और स्त्रियों के साथ बलात्कार हुआ जिनमे कोलकाता और रावलपिंडी सबसे बुरी तरह प्रभावित हुए थे. इसके बाबजूद गाँधी ने १९४७ में लार्ड माउन्ट बेटन को यह सुझाव दिया की पूरे भारत का शासन जिन्ना को सौंप दिया जाये और उन्हें अपना मन्त्रिमन्डल बनाने का पूरा अधिकार दे दिया जाये...कांग्रेस इसका पूरा समर्थन करेगी.

९. गाँधी ने अपने पत्र यंग इंडिया में लिखा की यदि भारत आजाद होता है और इसमें राजतन्त्र की स्थापना होगी तो हैदराबाद का निजाम भारत का शासक होगा.

१०. दिनरात अपने अल्पसंख्यक प्रजा की जान माल की रक्षा की चिंता में डूबे जम्मू-कश्मीर के शासक हरिसिंह पर ये हमेशा दबाव देते रहे की वे सत्ता शेख अब्दुल्ला को सौंपकर तीर्थयात्रा पर चले जाये पर यही सुझाव ये हैदराबाद के अत्याचारी निजाम को कभी नही दिए. जब गाँधी का कहना था कि

अल्पसंख्यक बहुसंख्यक से उलझ ही नही सकते हैं तो फिर जम्मू-कश्मीर में अल्पसंख्यक हिंदू सिक्ख से बहुसंख्यक मुस्लिमों को भला क्या खतरा था ?

११. कश्मीर पर हुए पाकिस्तानी आक्रमण का प्रतिकार अहिंसा से कैसे किया जाये इसपर गाँधी की राय थी की "जिनपर आक्रमण हुआ है उनको सैनिक सहायता न दी जाय. संघ राज्य अहिंसक सहायता करें, और वह विपुल मात्रा में. भले ही एसी सहायता मिले न मिले. जो आक्रमित है वे विनयबद्ध सेना का, अर्थात आक्रमणकारियों का प्रतिरोध न करें. आक्रमित अपने नियत स्थान पर क्रोध रहित और द्वेषरहित हृदय से आक्रामकों के शस्त्रों की बली चढें. शस्त्र प्रयोग नही करें. हाथ की मुट्ठी से भी प्रतिप्रहार न करें. ऐसा अहिंसामय प्रतिकार इस पृथ्वी पर इतिहास को आज तक ज्ञात नही है, ऐसा नेत्र दीपक शूरता का दर्शन कराएगा फिर कश्मीर पवित्र भूमि होगी. उस पवित्रता की सुगंध हिंदुस्तान में ही नही अपितु पूरे विश्व में महकेगी."

उपर्युक्त बातें गाँधी जी ने एक प्रेस कांफ्रेंस में कही थी. जब गाँधी जी से यह पूछा गया की "अहिंसक सहायता" का स्वरूप क्या होगा और वो आक्रमितों को किस प्रकार दी जा सकेगी तो गाँधी ने चुप्पी मार ली. जाहिर है "अहिंसक सहायता" शब्द से वे सिर्फ हिंदुओं के विरुद्ध अपना "अहिंसक हथियार" इस्तेमाल कर रहे थे.

१२. सवाल है हिंदुओं और सिक्खों की लाश पर ही कश्मीर पवित्र भूमि क्यों बनती ? क्या उनके रहते कश्मीर पवित्र भूमि नही थी या इन्हें लगता था हिंदू शासक, हिंदू, बौद्ध और सिक्ख प्रजा और उनके भगवान के रहते कश्मीर पवित्र भूमि नही बन सकती ? फिर हमेशा हिंदुओं को ही मरने की सलाह क्यों और उनके कायरता पूर्ण मौत को बार बार 'वीरता की मौत' कहकर किस अभीष्ट की सिद्धि करना चाहते थे ? सवाल यह भी है कि क्या आप इससे सहमत होंगे ? और अगर आप इससे सहमत हो भी गए तो क्या एसी नीति, ऐसा सोच राजनितिक सामाजिक दृष्टि से किसी देश या समाज के लिए उचित हो सकता है ?

१३. पाकिस्तान ने जब कश्मीर पर आक्रमण कर दिया और अल्पसंख्यक हिंदुओं और सिक्खों को बुरी तरह काटने मारने लगा तब भी सामूहिक असहमति के बाबजूद पाकिस्तान को ५५ करोड़ रूपये दिलाने के लिए आमरण अनशन पर बैठ गए और भारत से पाकिस्तान को ५५ करोड़ रूपया दिलवाकर ही दम लिए. सरदार पटेल ने उन्हें जिद्द छोड़ने के लिए हजार मिन्नतें की, सैनिकों के दर्द का एहसास और अपनी बेबसी पर उस लौह पुरुष की आँखों में आंसू आ गए पर गाँधी ने अपनी जिद नही छोड़ी. परिणामत: देशभक्तों के सब्र की सीमा समाप्त हो गयी और मजबूरन इनकी हत्या करनी पड़ी.

१४. भारत की उदारता का पाकिस्तान पर कोइ सार्थक परिणाम नही दिखाई देने पर गाँधी की राय था, "मुझे दु:खहै. अपेक्षित परिणाम तत्काल सामने नही आ रहे है और इसका कारण हिंदुओं को अहिंसा में पूर्ण विश्वास का न होना है."

१५. भारत के विभिन्न हिस्सों में होने वाली हिंदू-मुस्लिम दोंगों के सम्बन्ध में गाँधी का राय था : "निश्चय ही बहुसंख्यक हिंदुओं द्वारा अहिंसा के नियमों का पालन नही करने का परिणाम है क्योंकि अल्पसंख्यक मुसलमान बहुसंख्यक हिंदू से उलझ ही नही सकते है."

१६. ६ मई १९४६ को समाजवादी कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए गाँधी ने कहा था-"तब हम अहिंसा के डेरे लीग की हिंसा के क्षेत्र में भी गाड़ सकेंगे. हम बगैर उनका (मुसलमानों का) खून बहाए अपने रक्त की भेंट देकर लीग के साथ समझौता कर सकेंगे."

सवाल है कहीं यह गाँधी द्वारा हिंदुओं और सिक्खों को मरवाने की एक सोची समझी चाल तो नही थी ?

१७. जब धर्म के आधार पर भारत का विभाजन हुआ तो कायदे से इस्लाम के सभी अनुयायी को पाकिस्तान और बांग्लादेश चले जाना चाहिए था और हिन्द सभ्यता और संस्कृति के समर्थक को भारत आ जाना चाहिए था, परन्तु एकमात्र गाँधी थे जिन्होंने इसका विरोध किया और फिर नेहरु ने इसका समर्थन किया जिसके कारण यह नही हो सका. जिसका परिणाम यह हुआ की गाँधी के छलावे में फंसकर बांग्लादेश और पाकिस्तान में रह जानेवाले लाखों करोड़ों गैर मुस्लिम आज महज कुछ हजारों में सिमट गए है और मौत से भी बदतर जिंदगी जीने को बाध्य है. वे आज भी लूट, हिंसा, बलात्कार और धर्मान्तरण का शिकार हो रहे है और भारत से शरण की मांग कर रहे है.

दूसरी ओर भारत स्वतंत्रता के बाद भी कभी चैन से नही रहा और अनवरत सांप्रदायिक दंगे का उसी प्रकार शिकार होता रहा है जैसे आजादी पूर्व था. साथ ही जनसंख्या वृद्धि, आतंकवाद, अलगाववाद, छद्मधर्मनिरपेक्षता और इन सबसे उत्पन्न वोट बैंक की घृणित तुष्टीकरण की राजनीती, भुखमरी, गरीबी, बेकारी आदि समस्याओं से त्रस्त है.

१८. क्या गाँधी को इस बात का थोडा भी एहसास था? चलो मान लिया गाँधी भ्रम में था कि अल्पसंख्यक मुस्लिम हिंदुओं के विरुद्ध कुछ नही कर सकते, परन्तु जब उन्ही अल्पसंख्यक मुस्लिमों ने १९४६ में हिंदुओं के विरुद्ध प्रत्यक्ष कार्यवाही की खुली धमकी दी और किया भी जिसमे लाखों हिंदुओं को मौत के घात उतार दिया और हिंदू स्त्रियों के साथ बलत्कार किया, आगजनी और लूट-पाट किया तब तो उनकी आँखे खुल जानी चाहिए थी और इस्लाम की प्रकृति को समझते हुए, जो गैर मुस्लिमों के अस्तित्व को ही स्वीकार नही करता, धर्म पर आधारित विभाजन का सम्मान करते हुए हिंदू और मुस्लिमों के पूर्ण स्थानांतरण पर सहमत हो जाना चाहिए था, परन्तु उन्होंने ऐसा नही किया जिसकी कीमत आज हिंदुस्तान और हिंदुस्तान की जनता को चुकाना पड़ रहा है. स्थिति तो एसी उत्पन्न होती दिख रही है कि हिंदुस्तान की अखंडता एक बार फिर खतरे में पड़ती जान पड़ रही है. हिंदुस्तान का इतिहास हिंदूओं और हिंदुस्तान के विरुद्ध किये गए गाँधी के इस छल को कभी माफ़ नही कर पायेगा.

१९. गाँधी ने सोमनाथ के मंदिर को सरकारी खजाने से बनबाने के मन्त्रिमन्डल के निर्णय का खुला विरोध करते हुए कहा की मंदिर का निर्माण सरकारी खजाने से न होकर जनता के कोष से किया जाये, पर इसी गाँधी ने जनवरी १९४८ में नेहरु और पटेल पर दबाव डाला की दिल्ली की जामा मस्जिद का नवीनीकरण सरकारी खजाने से किया जाये और करवाकर ही माने.

२०. गाँधी ने भारत के प्रधान मंत्री के लिए सिर्फ दो व्यक्ति का समर्थन किया-एक था जिन्ना और दूसरा जवाहर लाल नेहरु. जिन्ना तो गाँधी का व्यक्तिगत पसंद था पर जब नेहरु के प्रधान मंत्री बनने पर मतदान हुआ तो नेहरु के पक्ष में सिर्फ एक मत पड़े थे, परन्तु फिर भी गाँधी ने नेहरु को ही प्रधानमंत्री बनाया. क्या इसलिए की नेहरु के संदर्भ में यह प्रचलित था की "नेहरु जन्म से तो हिंदू पर विचार से

विदेशी और कर्म से मुसलमान है ?”

२१. क्या यह सत्य है कि नेहरु ने गाँधी जी को धमकी दी थी कि अगर उन्हें प्रधान मंत्री नही बनाया गया तो वे कांग्रेस को भंग कर देंगे और भारत की आजादी का स्वप्न साकार नही हो पायेगा ?

इस बात में दम नही लगता क्योंकि मुस्लिम लीग पाकिस्तान के वगैर मानने वाला नही था. अत: भारत विभाजन अवश्यम्भावी था. उसी तरह भारत का आजाद होना किसी एक व्यक्ति या संगठन की शक्ति का परिणाम नही था बल्कि भारत के आजाद होने के बहुत से देशी और विदेशी कारक थे. ऐसे में नेहरु सिर्फ कुछ देर के लिए सम्भव है बाधा डाल सकते थे ; कुछ ज्यादा नही कर सकते थे. यदि मान भी लिया जाय की यह सत्य है तो फिर गाँधी ने आजादी के बाद भी नेहरु का समर्थन क्यों किया ?

२२. इतना ही नही अकेले दम पर भारत के ५०० से अधिक रियासतों को भारत में शामिल करनेवाले और जम्मू कश्मीर पर नेहरु की असफलता पर बार बार उनकी सहयोग की बात करनेवाले सरदार बल्लभ भाई पटेल पर हमेशा पदत्याग का दबाव क्यों बनाते रहे ? यह बात गाँधी की नियत पर सवाल खड़ा करता है.

२३. ३० जनवरी को यदि गांधी वध रुक जाता तो ३ फरवरी १९४८ को देश का एक और विभाजन हो सकता था. जिन्ना की मांग थी कि पश्चिमी पाकिस्तान से पूर्वी पाकिस्तान जाने में बहुत समय लगता है और हवाई जहाज से जाने की सभी की औकात नहीं है. इसलिए हमको बिलकुल बीच भारत से एक कोरिडोर बना कर दिया जाए ।

भारत एक और विभाजन से बच गया

i. लाहौर से ढाका जाता हो
ii. दिल्ली के पास से जाता हो
iii. जिसकी चौड़ाई कम से कम १० मील यानि १६ किलोमीटर हो
iv. १० मील के दोनों और सिर्फ मुस्लिम बस्तियां ही बनेगी

कहा जाता है कि गाँधी इस प्रस्ताव के पक्ष में थे और ३ फरवरी १९४८ को पाकिस्तान इसी मुद्दे पर सहमति के लिए जानेवाले थे.

२४. शहीदे आजम भगतसिंह को फांसी दिए जाने पर अहिंसा के महान पुजारी गांधी ने कहा था, “हमें ब्रिटेन के विनाश के बदले अपनी आजादी नहीं चाहिए” और आगे कहा, “भगतसिंह की पूजा से देश को बहुत हानि हुई और हो रही है. वहीं इसका परिणाम गुंडागर्दी का पतन है. फांसी शीघ्र दे दी जाए ताकि ३० मार्च से करांची में होने वाले कांग्रेस अधिवेशन में कोई बाधा न आवे.”

२४. अर्थात् गांधी की परिभाषा में किसी को फांसी देना हिंसा नहीं थी. इसी प्रकार एक और महान् क्रान्तिकारी जतिनदास जो भूख हड़ताल कर आगरा में शहीद हुए थे. गांधी आगरा में ही थे और जब गांधी को उनके पार्थिक शरीर पर माला चढ़ाने को कहा गया तो उन्होंने साफ इनकार कर दिया, परन्तु

यही गाँधी दूसरे विश्वयुद्ध में अंग्रेजों का समर्थन किया यहाँ तक की अमेरिका द्वारा जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराने का भी सभी समर्थन किया. क्या यह हिंसा का समर्थन नहीं था ?

२५. उधमसिंह ने जलियाँवाला बाग के अपराधी माईकल ओ डायर को इंग्लैण्ड में मारा तो गांधी ने उन्हें पागल कहा था. इसलिए लेखक नीरद चौधरी ने गांधी को दुनियां का सबसे बड़ा सफल पाखण्डी लिखा है.

२६. इतिहासकार सी. आर. मजूमदार लिखते हैं, "भारत की आजादी का सेहरा गांधी के सिर बांधना सच्चाई से मजाक होगा. यह कहना की उन्होंने सत्याग्रह व चरखे से आजादी दिलाई बहुत बड़ी मूर्खता होगी. इसलिए गांधी को आजादी का 'हीरो' कहना उन सभी क्रान्तिकारियों का अपमान है जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना खून बहाया."

२७. गाँधी की इसी नीति को नेहरु ने कांग्रेस में शामिल पाकिस्तान की मांग करनेवाले और पाकिस्तान बनने पर भी पाकिस्तान न जाकर कांग्रेस में शामिल हो जाने वाले देशद्रोही मुस्लिमों के सहयोग से धर्मनिरपेक्षता का स्वांग रचकर संगठित रूप दिया. इसी धर्मनिरपेक्षता की आड़ में देश की एकता अखंडता और सुरक्षा को दाव पर रख कर भी मुस्लिम परस्ती की सारी हदें पार करने की परम्परा चली आ रही है. (दैनिक जागरण में छपे एक लेख का हिस्सा)

२८. अंग्रेजों द्वारा स्थापित कांग्रेस पार्टी आज धर्मनिरपेक्षता की आड़ में उसी मुस्लिम तुष्टिकरण और फूट डालो राज करो की नीति को अपना रही है जिसका ज्वलंत उदहारण सांप्रदायिक दंगा निरोधक बिल है जो गाँधी की उसी सिद्धांत पर आधारित है कि अल्पसंख्यक मुस्लिम और ईसाई बहुसंख्यक हिंदू से उलझ ही नही सकते है. अत: किसी भी प्रकार की सांप्रदायिक हिंसा के लिए सिर्फ और सिर्फ हिंदू ही दोषी माने जायेंगे.

मुख्य आधार ग्रन्थ :

Why I Assassinated Gandhi, Writer-Gopal Godse
Sardar Patel's Correspondence, Writer-Durga Das
My Frozen turbulence in Kashmir, Writer-Jagmohan
Bharat Gandhi Nehru ki Chhaya me, Writer-Gurudutt
Bandi Jivan, Writer-Shachindranath Sanyal
गांधीजी का प्रार्थना और प्रवचन खंड-१,२ और ३ आदि

साभार https://truehistoryofindia.in/ से